ऑनलाइन शिक्षण : जब समुदाय बना सहभागी

दीपा पाण्डेय

इस महामारी के दौर में बच्चों की शिक्षा को जारी रखने के लिए एक शिक्षिका द्वारा किए गए प्रयासों का विवरण इस लेख में है। शिक्षिका बताती हैं कि उन्होंने इन प्रयासों की शुरुआत कैसे की, किस तरह पाठ्य सामग्री तैयार की, उसको बच्चों के साथ कैसे साझा किया। वे ऑनलाइन शिक्षण की सम्भावनाओं और सीमाओं को भी इस लेख में रेखांकित करती हैं। सं.

माह मार्च 2020, सबकुछ सामान्य चल रहा था। शैक्षिक सत्र 2019-20 अन्तिम पड़ाव की ओर था, और होली अवकाश के बाद वार्षिक आकलन होना था। तभी अचानक आदेश आया कि कोरोना महामारी के कारण एक सप्ताह का लॉकडाउन हो गया है। इसकी अवधि फिर बढ़ती गई और विद्यालय कई महीनों तक बन्द कर दिए गए। अभिभावक व बच्चे परेशान हो गए और साथ में एक अध्यापक के रूप में हमारी चिन्ताएँ व आशंकाएँ भी बढ़ती गईं। हमने बच्चों को समझाया और आश्वासन दिया कि हम लगातार फ़ोन के द्वारा आपसे जुड़े रहेंगे। कुछ समय तक तो वॉट्सएप ग्रुप के माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को जारी रखा लेकिन धीरे-धीरे उसमें कई तरह की चुनौतियाँ आने लगीं।

हमारे पास वर्चुअल प्लेटफ़ॉर्म या ऑनलाइन अध्ययन का विकल्प था। सरकारी व विभागीय स्तर पर भी इसपर ज़ोर दिया जा रहा था। परन्तु सार्वजनिक शिक्षा तंत्र में जहाँ लाभार्थी मुख्य रूप से वंचित वर्ग का बच्चा होता है, इसे लागू करने में हमें कुछ चुनौतियों से जूझना पड़ रहा था, जैसे– एंड्रॉइड फ़ोन की सीमित उपलब्धता, स्मार्टफ़ोन न होने से बच्चों का प्रक्रिया से कम जुड़ना व स्वयं को कमतर समझना, गाँव में नेटवर्क की समस्या और डाटा पैक (data pack) की अनुपलब्धता, बच्चों का भावनात्मक असन्तुलन और पाठ्यपुस्तक, पाठ्य सामग्री, लेखन सामग्री का अभाव, आदि। ऑनलाइन शिक्षण की ये चुनौतियाँ जब जन्म लेती हुई दिखने लगीं तब मन्थन किया और विचार आया कि क्यों न समुदाय को इस प्रक्रिया में प्रत्यक्ष रूप से शामिल करके देखा जाए। इस लेख में प्राथमिक कक्षाओं को ऑनलाइन माध्यम से संचालित करने में आई परेशानियाँ और इसमें समुदाय को कैसे शामिल कर पाई, इसपर अपने अनुभव प्रस्तुत करूँगी।

कार्य उद्देश्य

समुदाय के साथ काम शुरू करने के लिए मैंने सबसे पहले समुदाय से सम्पर्क कर कुछ बातें जानने की कोशिश की, जैसे– कोविड-19 और उससे बचाव के बारे में उनकी जानकारी क्या है? क्या सरकारी स्तर पर व अन्य संगठनों द्वारा उन्हें राशन मिल रहा है? क्या किसी परिवार का मुखिया या परिजन, मज़दूर या प्रवासी कामगार के रूप में लॉकडाउन में महानगरों में तो नहीं फँसा है? क्या कोई बालक आर्थिक परेशानी के कारण बाल श्रम करने को मजबूर तो नहीं है? पढ़ाई आदि को लेकर कोई



बालक हिंसा (पारिवारिक) का शिकार तो नहीं हो रहा? आदि।

उक्त जानकारियाँ लेना आवश्यक था क्योंकि अधिकांश बच्चे आर्थिक रूप से कमज़ोर व वंचित वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। इस बात की पूरी सम्भावना थी कि आपदा की इस घड़ी में पठन-पाठन उनके परिप्रेक्ष्य में दूसरा अहम मुद्दा हो सकता है। साथ ही मेरा मानना था कि बालकों के परिवेश को समझकर ही अध्यापक सफल शिक्षण-अधिगम साधन आदि डिज़ाइन कर सकता है। समुदाय के साथ किया गया संवाद उनके साथ भावनात्मक जुड़ाव बनाने में भी मदद करता है। ऐसी ही कुछ बातों पर सन्तोषजनक जानकारी हासिल करने के बाद शुरू हुई पढ़ने-पढ़ाने की बात और मैं एक योजना तैयार कर पाई– ऑनलाइन माध्यम पर अभिभावकों, बड़े भाई-बहिनों, चाचा एवं गाँव के ही अन्य सक्षम व्यक्तियों आदि को किसी रूप में शामिल करने (village resource group) व शिक्षण माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने का, जिसके मुख्य उद्देश्य थे– प्रत्येक बच्चे के घर पर बाल-समृद्ध वातावरण का निर्माण, पढ़ने की संस्कृति का विकास, शिक्षा के लक्ष्य प्राप्ति हेतु अभिभावकों में ज़िम्मेदारी का भाव जगाना, और बच्चों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ना।

इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मैंने कुछ लक्ष्य निर्धारित किए, जैसे– परिवेश व संस्कृति सम्बन्धी लोककथाओं, लोकगीत व लोकनृत्य से बच्चों को परिचित करवाना, स्वयं माताओं द्वारा इनकी व अपने लॉकडाउन अनुभवों की ऑडियो बुक बनाना, और भाषा-समृद्ध वातावरण निर्माण के माध्यमों को लागू करने में अभिभावकों की मदद लेना। यह सब करते हुए मेरी कोशिश यह भी रही कि समुदाय में कोविड-19 के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो और विद्यालयी क्रियात्मक समूह का अधिक सार्थकता से इस्तेमाल किया जा सके।

उक्त उद्देश्य की पूर्ति करने और एक अभिकरण के रूप में प्रयोग करने हेतु कुछ साधनों के इस्तेमाल से इस प्रकार कार्य किया गया।

शुरुआती दौर

जब स्कूल जाना सम्भव नहीं था, तकनीक की मध्यस्थता से शिक्षण सम्भव हो पाया। मोबाइल फ़ोन को अति महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। जिन घरों में एंड्रॉइड फ़ोन उपलब्ध था उनके अभिभावकों से व्यक्तिगत रूप से बातचीत करके एक निश्चित व सीमित समय के लिए बच्चों को फ़ोन उपलब्ध कराए जाने पर सहमति बनी। फ़ोन का इस्तेमाल

बच्चे दिनभर में मात्र 1 घण्टे के लिए ही करें जिससे वे उसका दुरुपयोग न कर पाएँ और विकिरण (radiation) के दुष्प्रभावों से कुछ हद तक बचाया जा सके। फिर बच्चों का एक वॉट्सएप समूह बनाया और उनकी प्रतिक्रिया व कार्य प्राप्त किया गया।

जिन बच्चों के पास सिर्फ़ साधारण फ़ोन थे उनको साथ में लेते हुए कॉन्फ्रेंस कॉल के माध्यम से फ़ोन पर बातचीत करके कुछ पाठ्य सामग्री (कविताओं, कहानियों व पाठों का सारांश) बताई गई और उन्हें साप्ताहिक कार्य हेतु कुछ कार्य नोट करवाए। उदाहरणस्वरूप, बच्चों को 'वे दिन भी क्या दिन थे' पाठ फ़ोन पर पढ़ाया गया।

पर जिन बच्चों तक तकनीक अपनी पहुँच नहीं बना पाई थी उन तक पहुँचने का ज़रिया समुदाय के बीच से खोजा गया। मेरे विद्यालय के प्राथमिक स्तर के हरेक बच्चे तक पहुँच बनाने के लिए मैंने गाँव के युवाओं, जिसमें कुछ ग्रेजुएट या बड़ी कक्षाओं के बच्चे शामिल थे और बच्चों के ही पड़ोसी, चाचा, मौसी, बहन, भाई, आदि थे, की मदद ली गई। पहले इन सभी से बातचीत कर इनमें अपने छोटों व गाँव के विद्यालय के प्रति ज़िम्मेदारी का भाव उत्पन्न करने की कोशिश की गई, फिर उनके फ़ोन से विद्यालय के बच्चों को जुड़वाया और इस तरह विद्यालय के सभी बच्चों का वॉट्सएप ग्रुप बना।

वॉट्सएप में इन्हें काम भेजा जाता जो यह बच्चों तक ले जाते। इन युवाओं ने बच्चों को वर्कशीट उतारकर देने, ऑडियो / वीडियो बनवाने, voice messages recording, dramatization का वीडियो बनवाने, शिक्षण अधिगम सामग्री आदि गतिविधियों में काफ़ी सहायता की।

युवाओं के अतिरिक्त मैंने माताओं एवं आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की मदद ली। चूँकि बच्चा शायद अपनी माँ के साथ ही सबसे ज़्यादा समय व्यतीत करता है, अत: माताओं को सशक्त बनाना इस समय ज़रूरी समझा। मैंने कुछ ऐसे कार्य चुने जो असाक्षर या कम पढ़ी-लिखी माताएँ भी अपने बच्चों से करवा सकती थीं। जैसे– किसी गाने में छोटा-सा नृत्य सिखाना, कहानी सुनाना, लोकगीत व लोककथा सुनाना, मास्क व अन्य आसान क्राफ़्ट सिखाना, चित्र दिखाकर प्रतिक्रिया लेना, अर्थात बच्चों इस चित्र में तुम्हें क्या दिख रहा है? इस चित्र के आधार पर कोई कहानी बनाओ, आदि। इनमें से जो काम माताएँ न कर पातीं, वहाँ हमारी आँगनवाड़ी कार्यकर्ता काम आतीं। आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने गाँव वालों तक सन्देश पहुँचाने में, बीच-बीच में बच्चों के घर जाकर बच्चों से कठिनाइयाँ आदि पूछने में और निरन्तर संवाद जारी रखने में काफ़ी मदद की।

ऐसा करने से बच्चों के साथ-साथ यह सभी लाभार्थी हुए क्योंकि इन्हें भी कुछ नया सीखने, और अपने हुनर दिखाने के मौक़े मिले।



पाठ्य सामग्री

बच्चों की शिक्षण प्रक्रिया सुगम बनाने हेतु बच्चों को कुछ पठन-पाठन सामग्री उपलब्ध करवाई गई। यह सामग्री शिक्षण के कुछ उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए चुनी गई थी जैसे, किसी पाठ को पढ़ाने के लिए यू-ट्यूब से कुछ वीडियो ढूँढ़कर भेजना जिससे बच्चों को



पाठ से सम्बन्धित ग्राफ़िक निरूपण भी मिल सके जो उनका ज्ञान स्थाई करने में मदद करे। इसके साथ मैंने भी कुछ कहानियों को स्वयं रिकॉर्ड किया और वीडियो बनाकर बच्चों को साझा किए।

एनसीईआरटी पुस्तकों से भी काम भेजा गया, और बच्चों के लिए वर्कशीटों का निर्माण किया गया ताकि बच्चों की लिखने की आदत न छूटे। साथ ही कुछ छोटी-छोटी और रोचक कहानियाँ संग्रह कर पीडीएफ़ बनाकर बच्चों को उपलब्ध करवाई गईं जिससे पढ़ने की आदत भी बनी रहे और वो अपने भाषाई कौशलों को और विकसित कर सकें। 'प्रथम' संस्था की पहल— मिस्ड कॉल देकर कहानी सुनना— का भी फ़ायदा उठाते हुए बच्चों को कहानी सुनने के लिए प्रेरित किया गया।

पिथौरागढ़ ज़िले में कार्यरत शिक्षकों के वॉट्सएप समूह, जो पहले से ही चल रहा था, में सभी शिक्षकों के साथ मिलकर कुछ विषयों में साप्ताहिक रूप से काम किया जाता था, और इच्छुक शिक्षक कुछ पाठ्य सामग्री तैयार करते और समूह में साझा करते। इस समूह का लाभ उठाते हुए मैंने भी इन चर्चाओं में सहभागिता कर कुछ पाठ्य सामग्री तैयार की और फिर प्रत्येक टॉपिक पर मेरे और साथी शिक्षकों द्वारा साझा की गई पाठ्य सामग्री को बच्चों तक पहुँचाया गया। इनपर प्राप्त बच्चों की प्रतिक्रियाओं को समूह में साझा कर चर्चा की गई। इन सब कार्यों को करने पर मेरी समझ बनी कि ऑडियो-वीडियो बुक्स एक बहुत ही प्रभावशाली माध्यम है, तो मैंने इसपर फ़ोकस होकर कार्य किया।

ऑडियो बुक्स को पढ़ने के एक संसाधन की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। इनकी मदद से मौखिक आदेश और अपनी आवाज़ में पाठ का सार रिकॉर्ड कर बच्चों को भेजा जा सकता है और शिक्षण प्रक्रिया सुचारु रूप से संचालित की जा सकती है। ऑडियो बुक पढ़ने की सामग्री (कोई कहानी, पाठ या सन्देश) वॉइस रिकॉर्ड द्वारा समझाने और भेजने में बहुत मददगार हुई। भाषा-समृद्ध वातावरण निर्माण करने में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं। मैंने ऑडियो बुक्स पर काम करके जाना कि यह शिक्षक, बच्चे और अभिभावक / समुदाय, सभी के लिए लाभदायक हो सकती हैं।

मेरा मानना है कि ऑडियो बुक्स जैसे संसाधन अध्यापक के स्वयं के क्षमता-संवर्धन के लिए भी काफ़ी उपयोगी हैं। अपनी शिक्षण

प्रक्रिया को रिकॉर्ड करना, सुनना, और फिर स्वयं की कमियों को समझकर अपने पढ़ाने के तरीक़ों में सुधार ला पाना एक अध्यापक के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। ऐसा कर पाने से शिक्षक के आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है। इसके साथ ही जो सामग्री (रिकॉर्डेड मटेरियल) बन रही होती है वह आगे के उपयोग (जब स्कूल खुलें) के लिए सुरक्षित रख सकते हैं जो कि बहुकक्षा व बहुविषय शिक्षण में काफ़ी सहायक हो सकती है।

बच्चों के लिए भी यह काफ़ी उपयोगी होती है क्योंकि इससे बच्चों को पुनरावृत्ति के मौक़े मिलते हैं जिससे उनके लिए सीखना अधिक ग्राही होता है। बच्चों के सुनने व बोलने का कौशल, अभिव्यक्ति कौशल बढ़ाता है, पढ़ने और लिखने की ओर वे आसानी से बढ़ते हैं। उनके लिए कुछ भी सीखना रुचिकर होता है, सीखना आनन्दमय होता है। जब बच्चे के कौशल में वृद्धि होती है तो आत्मविश्वास बढ़ता है और व्यक्तित्त्व में निखार आता है। वे स्वयं भी फ़ोन पर सुरक्षित सामग्री का भविष्य में पठन-पाठन में प्रयोग कर सकते हैं।

एक शिक्षक की भूमिका में काम करते हुए मैंने कई बार अनुभव किया है कि अभिभावक और गाँव में रहने वाले समुदाय के लोग यह कल्पना भी नहीं कर पाते कि वह भी बच्चों की शिक्षण प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं। ऑडियो बुक्स ऐसे लोगों के लिए काफ़ी कारगर सिद्ध हो सकती हैं। लोग कुछ नया सीखने के साथ-साथ अपने बच्चों की शिक्षण प्रक्रिया में भी शामिल हो सकते हैं। वे अपने अनुभव, कौशल व हुनर को रिकॉर्डेड प्रारूप में साझा कर सकते हैं। साथ ही शिक्षक द्वारा भेजी ऑडियो बुक्स को ख़ुद सुनकर समझ सकते हैं कि बच्चों से किस तरह से काम करवाना है और बच्चों से भी रिकॉर्डिंग करवाने में सहायता कर सकते हैं।

मेरा शिक्षण अनुभव

पहले हम वॉट्सएप रिकॉर्डिंग के माध्यम से ही संवाद कर रहे थे। फ़ोन को ध्यान से जानने-समझने पर वॉइस रिकॉर्डर का उपयोग करना, पॉज़ बटन (pause button) का उपयोग, कट (cut) करना आदि फ़ीचरों का इस्तेमाल करना सीखा।

सबसे पहले कहानी ‘When the moon goes missing’ को रिकॉर्ड किया, बार-बार ग़लती हुई। चूँकि कहानी लम्बी थी तो मैंने निश्चय किया कि उसे मैं ऐसे मोड़ पर छोड़ देती हूँ जहाँ से आगे बच्चे अपनी प्रतिक्रिया दें। तो एक प्रश्न देकर छोड़ दिया कि ‘moon कहाँ मिला होगा?’ वॉट्सएप ऑडियो और फ़ोन पर अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ मिलीं। बच्चों ने बोला कि उस रात अमावस्या होगी; चाँद मिला ही नहीं होगा, उसने तारों की मदद से खोजा होगा, आदि। चूँकि कहानी अँग्रेज़ी में थी तो मैंने भाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव पर फ़ोकस किया। सन्दर्भ को कोड मिक्सिंग में सेट किया जिससे बच्चे कहानी के सन्दर्भ को अच्छे-से समझ पाएँ।

पहली कहानी साझा करने के बाद मेरी समझ बनी कि अब छोटी कहानी का चुनाव करूँगी। अब दूसरी कहानी मैंने प्रथम पब्लिकेशन की ‘Amachi’s Amazing Machine’ रिकॉर्ड की। इसमें अपेक्षाकृत कम कठिनाई आई, और समय भी कम लगा। बच्चे काफ़ी ख़ुश थे। परन्तु अब बच्चों का आकलन कैसे करूँ, यह समझ नहीं आ रहा था। अत: मैंने आगे की कहानियों में कुछ निर्देश डालने का निश्चय किया।

स्पष्ट निर्देशों के साथ और कोड मिक्स (code mix) में अँग्रेज़ी की कहानियों की रिकॉर्डिंग भेजने से समझ आया कि बच्चे कैसे और कितना समझ पा रहे हैं। दूरस्थ अधिगम (Distance Learning) की समस्याएँ भी समझ पा रही थी। और यह भी कि बच्चों से कैसे कक्षा में सरलता से संवाद स्थापित हो जाता है। यह भी समझ आया कि अधिकांश बच्चे हिन्दी की कहानियों में रुचि ले रहे हैं क्योंकि वे उन्हें आसानी से समझ पा रहे थे।

अँग्रेज़ी के लिए यहाँ पर मैंने एक और प्रयोग किया। Listening फ़िर speaking के स्थान

पर मैंने पहले Reading फ़िर listening और तब speaking तकनीक से कार्य किया। अँग्रेज़ी की एक कहानी को लिखकर या मुद्रित रूप में पहले उपलब्ध करवाया, फिर रिकॉर्डिंग भेजी तो बच्चों ने ज़्यादा रुचि दिखाई। तब अँग्रेज़ी कहानियाँ हिन्दी या कोड मिक्स में रिकॉर्डिंग करके बच्चों द्वारा साझा की गईं।

यह सब प्रयास बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया से सार्थकता के साथ जोड़ने के लिए किए जा रहे थे, पर अभी भी कुछ बच्चे ऐसे थे जो रुचि नहीं ले रहे थे। उनके लिए उनकी माताओं का सहयोग लिया गया। चूँकि छोटे बच्चों को किसी की उपस्थिति चाहिए होती है, तो माताओं को तैयार किया गया कि वह अपने स्तर पर बच्चों को संलग्न कर पाएँ। जैसा कि मैंने पहले भी कहा, इसके लिए लोककथाओं, लोकगीतों, और लोकनृत्य का सहारा लिया। उदाहरणस्वरूप, कुमाऊँनी लोककथा 'काफल पाक्को मैं नहीं चाखों' किसी अन्य साथी से प्राप्त कर साझा की और माताओं को समझाया गया कि बच्चों को सुनाएँ और उसपर बातचीत करें। साथ ही बच्चों से और माताओं से भी उनके अनुभव एवं कहानियों की रिकॉर्डिंग करने को प्रोत्साहित किया। उन्होंने काफ़ी रुचि दिखाई। चित्र पठन और मास्क बनाने में भी उन्होंने मदद की और अपनी रिकॉर्डिंग एवं वीडियो साझा किए।

उक्त प्रकार से कार्य करते हुए मेरे द्वारा अब तक 16 कहानियों (6 अँग्रेज़ी एवं 10 हिन्दी) की ऑडियो बुक्स बनाकर बच्चों को उपलब्ध करवाई गई हैं। बच्चों के द्वारा उनकी कहानियों और लॉकडाउन अनुभवों की रिकॉर्डिंग वॉट्सएप ऑडियो के रूप में ग्रुप में साझा की गईं। बच्चों द्वारा साझा किए गए ऑडियो पर अन्य बच्चे भी अपनी प्रतिक्रिया रिकॉर्ड करके भेजते और इस प्रकार यह गतिविधि समूह में सीखने (peer–learning) का कार्य करती।

बच्चे वॉट्सएप ऑडियो तो आसानी से भेज रहे थे परन्तु ऑडियो रिकॉर्डिंग्स से परिचित करवाने के बाद और बेहतर काम करने लगे। यहाँ भी काफ़ी चुनौतियाँ आईं। शुरुआत में वे सभी वही ग़लतियाँ करते जो मैं कर रही थी। धीरे-धीरे वे अभ्यस्त हो गए और अब तक उनकी 25 से ज़्यादा ऑडियो बुक्स तैयार हैं। इस प्रक्रिया में 6 माताओं की काफ़ी सक्रिय भागीदारी रही। उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए दूरस्थ अधिगम, ऑनलाइन शिक्षण और लॉकडाउन के अनुभवों को साझा किया। कुछ ने लोककथा, लोकगीत की रिकॉर्डिंग भेजीं, चित्र पठन पर बच्चों को कार्य करवाए और लोकनृत्य सिखाने का वीडियो भी साझा किया। वे इस प्रक्रिया से जुड़कर काफ़ी उत्साहित हैं। उनमें यह समझ बनी है कि वे स्वयं भी शिक्षण अधिगम में भागीदार बन सकती हैं।

इस प्रकार युवाओं ने स्वयं की क्षमताओं का उपयोग करते हुए गाँव में आए अन्य स्कूलों के बच्चों को एक्शन सॉन्ग, ड्रामेटाइज़ेशन, पज़ल और फ़्लैश कार्ड का इस्तेमाल करने में हमारे बच्चों के साथ जोड़कर और कुछ हद तक फ़ेसिलिटेटर का कार्य करते हुए अपना समय देते हुए महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसमें सात युवा बच्चे एवं कक्षा 6, 7, और 8 के पाँच बच्चे भी शामिल हुए।

आगामी योजना

इस लेख को समाप्ति की ओर ले जाते हुए मैं एक बात रखना चाहूँगी कि यदि ऑनलाइन प्रक्रिया को सिर्फ़ वॉट्सएप ग्रुप में अधिगम सामग्री को साझा करने तक सीमित कर दिया जाए तो यह प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को लम्बे समय तक न तो आकर्षित कर सकती है और न ही लाभदायक सिद्ध हो सकती है। अब हालात ऐसे हो रहे हैं कि बच्चे इस प्रकार भेजी गई सामग्री को देख तक नहीं रहे हैं और अभिभावक अलग परेशान हो रहे हैं।

दूसरी ओर हमारे संसाधनविहीन छात्र-छात्राएँ आभासी मंच (virtual platform) पर पूर्ण रूप से आ नहीं सकते, ऐसे में ऑडियो बुक्स उनकी रुचि को बनाए रखने और अधिगम को ख़ुशनुमा

कक्षाओं में बदलने में एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावी माध्यम का कार्य करती हैं।

वर्तमान में जबकि पिथौरागढ़ में कोरोना संक्रमण जारी है, और प्रत्यक्ष रूप में बच्चों से मिलकर शैक्षिक प्रक्रिया सामान्य तरीक़े से संचालित करना सम्भव नहीं है तो मेरा प्रयास रहेगा कि ऑडियो बुक्स को एक प्रकार से सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम बनाकर समुदाय के सहयोग से बच्चों से निरन्तर संवाद क़ायम किया जाए। स्वयं एवं कई अन्य शिक्षक साथियों द्वारा तैयार पाठ्य सामग्री पर बच्चे अपनी प्रतिक्रिया लिखें और कुछ पर अपने ऑडियो बनाकर भेजें। रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से हम आपस में संवाद बनाए रखें जिससे उनके लिए अधिगम उबाऊ न हो और एक अध्यापक मार्गदर्शक के रूप में मैं उनका आकलन भी कर पाऊँ। मेरा उद्देश्य है कि इस वर्ष के अन्त तक लगभग सब बच्चों के पास 10 से 15 ऑडियो बुक्स हों जिनमें उनके अनुभव और प्रतिक्रियाएँ दर्ज हों।



माताओं के हुनर भी ऑडियो रूप में दर्ज हों जो हमें भविष्य में अपनी कक्षाओं में आवश्यकतानुसार शिक्षण माध्यम के रूप में इस्तेमाल कर भाषा-समृद्ध वातावरण निर्माण एवं अन्य गतिविधियों में मदद करें। वे अधिक सक्रियता से भागीदारी कर पाएँ और स्वयं को अपने बच्चे की शिक्षा के एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ के रूप में सशक्त बना सकें।

दीपा पाण्डेय ने 16 वर्षों तक उत्तराखंड के पर्वतीय अंचल पिथौरागढ़ के दूरस्थ नेपाल बॉर्डर पर स्थित राजकीय प्राइमरी विद्यालय मनकटिया में प्रभारी प्रधानाध्यापक के रूप में कार्य किया है। वर्तमान में राजकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय सकुन में शिक्षण कार्य कर रही हैं। बच्चों के स्वयं के अनुभवों को सीखने का आधार बनाना उनकी प्राथमिकता रही है। इन्हीं अनुभवों से कोविड-19 की विषम परिस्थिति में ऑनलाइन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण तरीक़े से सम्पन्न करवाने का अवसर मिला है।

सम्पर्क : dp3763364@gmail.com